NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 8, Aug. -2020

द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति तथा शैक्षणिक उपलब्धि

लेखन - विनिता कुमारी
पीएच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त)
आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी पटना, से संबद्ध

सह लेखन - विनय कुमार
पीएच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साऊथ बिहार, गया

सार

इस शोध का उद्देश्य है द्वि-वर्षीय बी. एड.पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना । इस शोध में द्वि-वर्षीय बी. एड. प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है ।

इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया । यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा 200 बी.एड.महाविद्यालय के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को चयनित किया गया । इस अध्ययन में स्वनिर्मित एवं वैद्यीकृत द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृत्ति मापनी एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि मापनी का प्रयोग किय गया । परीश्व एवं पीयरसन प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसंबंध द्वारा आँकडा का विश्लेषण किया गया । शोधार्थी ने अपने शोध में द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की

मनोवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि औसतन अच्छी है ।

मुख्य बिंदु : द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी, मनोवृत्ति तथा शैक्षणिक उपलब्धि |

परिचय

शिक्षा मानव जीवन का आधार है| यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव की छिपी हुई शक्तियों का विकास होता है| इसके माध्यम से मनुष्य में नए ज्ञान, कौशल, मूल्य,आदर्श इत्यादि का बीजारोपण किया जाता है, जो समय तथा अनुभव के आधार पर विस्तृत होता चला जाता है, और मानव जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है | भारतीय संस्कृति में शिक्षा को जीवन के शाश्वत मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है| शिक्षा को विद्या तथा ज्ञान के रूप में ग्रहण किया गया है| वेदव्यास रचित "श्रीमद् भागवतगीता" में ज्ञान तथा शिक्षा को संसार का सबसे महत्वपूर्ण तथा पवित्र तत्व बताया गया है | इसमें विद्या को स्पष्ट रूप से कहा गया है कि :-

"न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विधते"
अर्थात् इस संसार में ज्ञान के सामान और कुछ पवित्र है ही नहीं |
(मालवीय 2008 पृष्ट सं -1)

शिक्षा वो ज्योति है जो जीवन के सभी पक्षों को आलोकित करती है | शिक्षा पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करती है | इसलिए इसे मानव का तीसरा नेत्र भी कहा जाता है | शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योतिर्मय पक्ष है जिससे व्यक्तित्व का चहुमुखी (सर्वांगीण) विकास होता है | शिक्षा मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर, निराशा से आशा की ओर तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर करती है | प्रत्येक मनुष्य जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सिखता है, अनुभव करता है, तथा अपनाता है वह शिक्षा ही है, शिक्षा के द्वारा समृद्धि प्राप्त कर मनुष्य एक कुशल जीवन व्यतीत करने में सफल होता है | शिक्षा प्राप्त करने के विविध माध्यम है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को शिक्षित किया जाता है | जैसे- औपचारिक, गैर-औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा इत्यादि | औपचारिक शिक्षा के लिए व्यक्ति को निश्चित शिक्षण – अधिगम प्रकिया, तथा पाठ्यचर्या के प्रविधियों से होकर गुजरना पड़ता है | इसके साथ ही शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिक्षण-अधिगम वातावरण, शिक्षक,विद्यार्थी तथा पाठ्यचर्या का होना अनिवार्य है ,तभी शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया सही दिशा में संचालित हो

पाती है | शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण अंग- शिक्षक,विद्यार्थी तथा पाठ्यचर्या है | यदि देखा जाये तो एक विद्यार्थी अपने शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता है और वह शिक्षण कार्य निश्चित पाठ्यचर्या पर निर्धारित होती है | जिस प्रकार एक शिक्षक अपने विद्यार्थी को शिक्षित करता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी इस स्थान तक पहुचने के लिए प्रशिक्षण लेता है, जिससे वह शिक्षण कार्य के लिए औचारिक रूप से तैयार हो जाये |

अध्ययन की सार्थकता

यह अध्ययन बी. एड.प्रशिक्षणार्थियों में द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृत्ति तथा शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन है | यह अधययन प्रशिक्षणार्थियों के पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाकर उनकी समस्याओं को कम करने में सार्थक सिद्ध होगी | मनोवृति तथा शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से सबंधित है| शिक्षा के माध्यम से मनोवृत्ति में में परिवर्तन होता है तथा मनोवृत्ति के आधार पर व्यक्ति अपने शैक्षणिक उपलब्धि को हासिल करने में सफल होता है | यह अध्ययन द्वि वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को जॉचने में सहायक है |द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या में सम्मिलित कार्यक्रम जैसे – सैधांतिक- पत्र,विधि-पत्र, ई.पी. सी.,शिक्षण-अवलोकन, शिक्षण-अभ्यास,पाठ्य –सहगामी क्रियाएं इत्यादि है, उन गतिविधियों का प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव का पता लगाने में सहायक है |द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के विकसित कौशल को जानने में सहायक |द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के सोच के अधार पर उनके शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को जॉचने में सहायक | इस शोध के आधार पर पाठ्यचर्या के निर्माण, मूल्यांकन एवं संशोधन में सहायता मिलेगी |

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

सुषमा (2016) ने द्वि- वर्षीय बी.एड.पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की मनोवृत्ति का अध्ययन किया और पाया की शिक्षक शिक्षकों में से कुछ दो साल के बी.एड कार्यक्रम को स्वीकार करते हैं क्योंकि यह शिक्षण क्षमता, प्रशिक्षण में अधिक कौशल सिखाना तथा शिक्षक शिक्षकों को छात्रों को पूरी तरह से ढालने के लिए अधिक समय मिलता है

वेडेल, (2011) ने " माता - पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पत्ति के बीच में सार्थक संबंध की पहचान का समीक्षात्मक अध्ययन " किया । इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे माता - पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पत्ति के बीच के सार्थक संबंध का पता लगाना । इस अध्ययन से निम्न परिणाम प्राप्त हुए समुदाय आधारित माता - पिता की सहभागी क्रियाकलाप , माता - पिता की शैक्षणिक योग्यता , पारिवारिक आय और छात्रों की शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच उच्च सार्थक साहचर्य है ।

शल्य परिभाषा

शोधार्थी में शोध में आने वाले विशिष्ट पदों का वर्णन निम्नलिखित तरीके से किया है :-

बी. एड. पाठ्यचर्या:- पाठ्यचर्य से अभिप्राय उस तकनीक एवं उपकरण से है जिसकी सहायत से शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है | यह कार्यक्रम 2014 तक एक वर्ष के रूप में चलाया जाता था | लेकिन भारत सरकार तथा NCTE Nov 28,2014 के सुझाव के अनुसार अब इस कार्यक्रम को दो वर्ष के रूप में चलाया जाता है | पाठ्यचर्या के अंतर्गत पेडागोजी ज्ञान, विषय वस्तु ज्ञान, तथा पाठ्य -सहायक गतिविधियाँ सम्मिलित होती है | द्वि वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या को तकनीक एवं प्राविधि के रूप में लिया गया है, जिसकी सहायता से शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण-कौशल, मनोवैज्ञानिक-दक्षता, सैधांतिक-ज्ञान तथा पूर्व शिक्षण अभ्यास को सिखाया जा सके |

बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति:- मनोवृत्ति मुख्य रूप से मानव मन की उस दशा को कहते है | जब वह किसी वस्तु के प्रति किसी भी प्रकार की सकारात्मक या नकारात्मक सोच रखता है | यहाँ द्वि-वर्षीय शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति से अभिप्राय है उनकी सोच से है की वे द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति किस प्रकार की सोच रखते हैं | यदि उनका सोच पाठ्यचर्या के प्रति सकारात्मक / नकारात्मक होगा तो उनके उपलब्धि एवं व्यक्तित्व में उसका असर दिखेगा |

बी. एड. पाठ्यचर्या के आधार प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि:- 'उपलब्धि' पद का प्रयोग शोधार्थी ने अपने शोध में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की द्वि-वर्षीय न. एड. पाठ्यचर्या के फलस्वरूप प्राप्त

शैक्षणिक सफलता से लिया है | अर्थात् बी. एड. पाठ्यचर्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षणिक योग्यता, व्यवहारिक ज्ञान, सामाजिक कुशलत, तथा व्यक्ति के सर्वांगिण कुशलता के रूप में देखा जा सकता है | उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक निष्पति से है | शिक्षक – प्रशिक्षणार्थियों के बी. एड. कोर्स पूरा करने के उपरान्त उनकी योग्यता,कुशकता,दक्षता, निपुणता से है | तथा साथ ही उनकी शिक्षण - अधिगम तथा शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य में सफलता से है |

शोध उद्देश्य

द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना |

द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध का ऑकलन करना|

द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध को जॉचना |

शोध विधि शोध समस्या के अनुरूप आकाड़ो के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है | आकाड़ो के संकलन के लिए पटना को लिया गया है | जिसमें 200 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है | प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित स्व-निर्मित तथा वैधिकृत उपकरणों को प्रयोग किया गया है|

प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया

सर्वप्रथम शोधार्थी ने प्रतिदर्श के रूप में चयनित महाविद्यालय में जाकर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अनुसन्धान में लाये जाने वाले उपकरणों से परिचय कराया | पुन: शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों पर उपकरण को क्रियान्वित किया|

अध्ययन के समष्टि एवं प्रतिदर्श

शोधार्थी ने प्रतिदर्श के रूप में दो सौ शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया, जो सरकारी मिशनरी तथा प्राईवेट शिक्षण संस्थानों से थे |

उपकरण

स्वनिर्मित एवं वैधिकृत द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति निर्धारण मापनी|

स्वनिर्मित एवं वैधिकृत द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि निर्धारण मापनी|

संख्यांकीय तकनीक का प्रयोग

माध्य
प्रमाणित विचलन
टी-अनुपात
सह-संबंध

अध्ययन की परिसीमाएँ

समिष्टि के रूप में पटना शहर के शिक्षा- बिभाग के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है|
प्रतिदर्श के रूप में केवल 200 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है|

परिकल्पनाएं

शोधार्थी ने शोध के लिए विशिष्ट उद्देश्य के अधर पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं को बनाया है-

द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है |
द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है |
द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है |

परिकल्पनाओं का विभेदक विश्लेषण

नल परिकल्पना -1 द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है |

तालिका संख्या - 1

द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह - सम्बन्ध

		मनोवृत्ति	उपलब्धि
attitude	Pearson Correlation	1	-.155*
	Sig. (2-tailed)		.029
	N	200	200
achieve	Pearson Correlation	-.155*	1
	Sig. (2-tailed)	.029	
	N	200	200
*. Correlation is significant at the 0.05 level (2-tailed).			

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य का मान (-.155) है जो 5 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (0.138) सारणी मूल्य से अधिक है, इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है |

अर्थात् द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है |

नल परिकल्पना - 2 द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है |

तालिका संख्या – 2

द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह -सम्बन्ध

		attigirls	Achievgirls
attigirls	Pearson Correlation	1	-.228**
	Sig. (2-tailed)		.006
	N	144	144
achievgirls	Pearson Correlation	-.228**	1
	Sig. (2-tailed)	.006	
	N	144	144
**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).			

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य का मान (-.228) है जो 1 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (0.162) सारणी मूल्य से अधिक है, इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात् द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है |

नल परिकल्पना - 3 द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है|

तालिका संख्या - 3

द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह - सम्बन्ध

		attiboys	achievboys
attiboys	Pearson Correlation	1	.082
	Sig. (2-tailed)		.550
	N	56	56
Achievboys	Pearson Correlation	.082	1
	Sig. (2-tailed)	.550	
	N	56	56

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य का मान (-.082) है जो 5 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (0.26) सारणी मूल्य से अधिक है, इसलिए नल परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है | द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है|

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में द्वि-वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :

नल परिकल्पना -1 द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है अर्थात् शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता इसका कारण शिक्षक-

प्रशिक्षणार्थी की पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सोच तथा अनुकूल शिक्षण वातावरण हो सकता है|

नल परिकल्पना - 2 द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है अर्थात् लगभग सभी महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि एक जैसी है | इसका कारण उनकी सोच तथा मेहनत हो सकती है |

नल परिकल्पना - 3 द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है अर्थात् लगभग सभी पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति मनोवृति तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि एक जैसी है | इसका कारण पाठ्यचर्या के प्रति उनकी सकारात्मक विचार तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध हो सकता है|

प्रस्तत अध्ययन से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, माध्यम, निवास- स्थान,शैक्षणिक –योग्यता तथा वैवाहिक-स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है , जबकि महाविद्यालय के प्रकार का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है । अत :महाविद्यालय के प्रकार की शिक्षण प्रणालियों में सुधार लाने की आवश्यकता है जिससे कि शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि हो सके ।

सन्दर्भ सूची

कपूर,बी.(2011).शिक्षा में मापन और मूल्यांकन एवं सांख्यकी,अग्रवाल पब्लिकेशन

कॉल, बी.(2010).शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली,विकास पब्लिकेशन हॉउस प्रा.लि.नई दिल्ली

गुप्ता,एस.पी., अल्का.(2008).शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन.आगरा

त्यागी, जी.(2010). भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

माथुर,एस.एस.(2013).शिक्षा की दार्शनिक तथा सामाजिक आधार,अग्रवाल पब्लिकेशन ,आगरा

मंगल, एस.के.(2008).शिक्षा में सांख्यिकी पी.एच.आई.,प्र.लि.जयपुर

वालिया, जे.(2010).शिक्षा तकनीक. अहम पाल पब्लिशर्स, पंजाब

अर्चना अधिकारी,(2017). असम के शिक्षा संस्थान में दो साल बी.एड. कार्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की धारणा, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन*, खंड 7, अंक 9, सितंबर 2017 385
ISSN 2250-3153

नटराज, (2016). ने शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए दो साल से पहले के कार्यक्रम और उनका भविष्य, आई। *जर्नल अप्रैल-मई*, 2016, वीओएल। 3/15 ISSN 3646-3649